MATTERS RAISED WITH PERMISSION

Atrocities on Dalits in Maharashtra

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश): श्रीमन्, मैंने रूल 267 के अंतर्गत एक नोटिस दिया है।

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, I have received notices, under various rules, to discuss the situation in Maharashtra yesterday. Accordingly, I called the Leader of the Opposition and subsequently, wanted to call other Members also to speak on the issue. But, unfortunately, the House could not transact any Business at that time and now, I have decided, even though that is not the normal practice, to allow one minute to each Party to just mention the issue and express their points of view, so that the Government could take note of it. Mr. Hansraj Ahir may make a note of it. Now, we would start with the Leader of the Opposition, or do you want Shrimati Rajani Patil to speak first?

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI GHULAM NABI AZAD): Sir, I would prefer that Shrimati Rajani Patil speaks first.

MR. CHAIRMAN: All right. Shrimati Rajani Patil may speak; please be brief. Our effort should be to be brief. I have an appeal to the entire House. Our approach should be to see that the tempers come down and the situation is brought back to normalcy, because we should not escalate tensions there. After all, it is a social conflict.

श्रीमती रजनी पाटिल (महाराष्ट्र): सर, भीमा-कोरेगांव, पुणे में हाल ही में जो घटनाएँ घटी हैं, जिसका परिणाम हमें पूरे महाराष्ट्र में, चाहे अहमदनगर हो, पुणे हो, मुम्बई हो, नागपुर हो, दिखाई दे रहा है, उस घटना की निंदा करने के लिए मैं यहां खड़ी हूँ। भीमा-कोरेगांव में एक जनवरी, 1818 में 200 साल पहले एक ऐतिहासिक लड़ाई हुई थी, जहां पर महार रेजिमेंट ने पेशवाओं को हराया था। उसका विजय स्तम्भ बनाया गया और विजयोत्सव मनाने के लिए, उसकी यादगार मनाने के लिए वहां पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जब राज्य सरकार को, पुलिस संगठन को इसकी पूरी जानकारी थी कि यहां पर इतनी तादाद में लोग आने वाले हैं, 28 दिसंबर को एक छोटी सी घटना वढू में भी हुई थी, वढू नजदीक में एक गांव है, वहां पर भी एक घटना हुई थी, लेकिन यह सब जानते हुए भी राज्य सरकार ने कार्यक्रम को प्रतिबंधित करने के लिए कि ऐसी घटना न घटे और लोगों को सुरक्षा मिले, ऐसा करने के लिए कोई भी इंतजाम नहीं किया था। हालांकि वहां पर जिग्नेश मेवानी, जिनको बुलाया गया था, उन्होंने अपने भाषण में कहा है कि मुझे यहां आने के लिए प्रतिबंधित किया गया था कि ऐसी घटना घटने वाली है, आप मत आओ। सर, महाराष्ट्र में अपनी एक विचारधारा है। महाराष्ट्र शिवाजी महाराज के नाम से जाना जाता है। शिवाजी महाराज की फौज में सभी तरह के लोग, सभी जातियों के लोग, सभी धर्मों के लोग थे। शाहू, फुले और अम्बेडकर, ये तीन लोग, तीन त्रयी, जिनके बारे में हम महाराष्ट्र के लोग अभिमान से बोलते हैं कि जिनकी पूर्वगामी विचारधारा से महाराष्ट्र का नाम उजागर हो गया है, लेकिन जिन मनुवादी विचार संगठनों को इन तीन विचारों ने दबा कर रखा हुआ है, वे मनुवादी विचार संगठन महाराष्ट्र में फिर उभर कर आ रहे हैं। सर, एक मिनट।

श्री सभापतिः आप अपना सुझाव बताइए।

श्रीमती रजनी पाटिलः सर, मैं बता रही हूँ। सर, अम्बेडकर जी के नाम से महाराष्ट्र को जाना जाता है। अम्बेडकरवादी संगठन यहां पर तैयार हुआ था। अठावले साहब, जिन्होंने यहां पर गले में मटके बांधे थे, कमल को झाड़ू लगाए थे, उनकी छाया भी हमें पसंद नहीं है...

MR. CHAIRMAN: Madam, please, I have given you two minutes. You have to conclude now.

श्रीमती रजनी पाटिलः हमारे ऐसे दलित बंधुओं के लिए जिन्होंने लड़ाई लड़ी, उनके लिए फिर एक विचार उभर कर सामने आ रहा है। *

MR. CHAIRMAN: Please that will not go on record. Nothing will go on record. Now, Shri Naresh Agrawal. My appeal to all of you is to please confine to the time and also to see that the situation is brought back to normalcy.

श्रीमती रजनी पाटिलः *

SHRI SATISH CHANDRA MISRA (Uttar Pradesh): Sir, one minute is very less. Please allow two minutes.

श्री नरेश अग्रवालः सर, दो-दो मिनट समय दे दीजिए।

माननीय सभापति जी, कुछ विकृत मानसिकता के लोग, जो अपने को भारतीय जनता पार्टी के parallel संगठन कहने लगे हैं, क्योंकि आज भारतीय जनता पार्टी के तमाम parallel संगठन, सत्ता में आने के बाद वे मानने लगे हैं कि वे जो चाहेंगे, वही अधिकार लोगों को देंगे और वे चाहेंगे, तभी लोग अपने function मना सकेंगे और उनकी विचारधारा में आज भी दलित, backward and minority...

श्री सभापतिः आप विषय पर आइए।

श्री नरेश अग्रवालः मैं विषय पर आ रहा हूँ। वे दोयम दर्जे के नागरिक हैं। इसी के तहत महाराष्ट्र में जो हुआ, वह हुआ।

श्री सभापतिः आप विषय पर आइए प्लीज़। हम ideology discuss नहीं कर रहे हैं।

श्री नरेश अग्रवालः मैं विषय पर आ रहा हूँ।

विधि और न्याय मंत्री; तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री रवि शंकर प्रसाद): सर, हम इसका प्रतिवाद करते हैं।

श्री नरेश अग्रवालः श्रीमन्, जब महाराष्ट्र सरकार को पता था कि वहां हर साल function होता है, तो क्या यह महाराष्ट्र सरकार की जिम्मेदारी नहीं थी कि वहां पर वह security का इंतजाम करे? ** ने जान-बूझ कर अपने संगठनों के दबाव में वहां पर दलितों पर अत्याचार किए। यह ** के संरक्षण में हुआ। ...**(व्यवधान)**...

---

* Not recorded.
** Expunged as ordered by the Chair.

श्री सभापतिः नहीं, नहीं, प्लीज़, इससे कुछ होने वाला नहीं है।

श्री नरेश अग्रवालः सर, मैं चाहूँगा कि इसमें जो लोग involved हैं, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो और एक बड़ा कमीशन बना दिया जाए, जो सारी रिपोर्ट दे दे और उस रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई हो।

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, this is a serious issue. The real culprits must be brought before the courts and they must be dealt with in accordance with the law. We, the Indian people, must concentrate on developmental activities rather than concentrating on caste lines or communal lines. I strongly condemn this act.

SHRI MD. NADIMUL HAQUE (West Bengal): Sir, all over the country the marginalised are under attack - be they dalits, minorities, women or OBCs. We are seeing that it is not an isolated incident, but a pattern is emerging. We saw how the commercial capital of India and the capital of Maharashtra, that is, Mumbai, came to a standstill. The Government is not doing anything. It has no answers. It is just interested in event management. I will say this much that this political lynching should immediately stop. A judicial inquiry has been ordered. I demand that it should be carried out immediately in an impartial manner.

श्री दिलीप कुमार तिर्की (ओडिशा): सर, दलितों के ऊपर जो अत्याचार हो रहा है, वह काफी दुखद घटना है और यह सिर्फ महाराष्ट्र की ही घटना नहीं है, बल्कि अन्य प्रदेशों में भी दलितों पर अत्याचार हो रहा है। मेरा निवेदन है कि उनके ऊपर अत्याचार नहीं होना चाहिए और जहां-जहां दलितों पर अत्याचार हो रहा है, उसका पता करना चाहिए कि उसके क्या कारण हैं? हमारी पार्टी इसे कंडेम करती है।

SHRI T. K. RANGARAJAN (Tamil Nadu): Sir, what is happening now is not only the *Dalits* but the minorities and women are also the targets in all parts of the country. We are now discussing the tragedy which happened in Maharashtra. Sir, it had the practical support of administration, police and ruling party. So, I demand a judicial inquiry by a sitting Supreme Court Judge so that the culprits are brought to book. Some action must be taken. This should not happen in any State. In my State, *Dalits* are attacked; in my State, Muslims are attacked. You can see the picture in every State. So, Sir, I demand a judicial inquiry into the Maharashtra incident and all the culprits must be brought to book.

श्री वीर सिंह (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति महोदय, महाराष्ट्र में पुणे के भीमा-कोरेगांव में शौर्य दिवस की 200वीं सालिगरह के अवसर पर दलित समाज के लोगों पर भगवा झंडाधारियों द्वारा किया गया हमला, हिंसा व दंगा दलित स्वाभिमानियों को कुचलने का फासीवादी प्रयास है। बहुजन समाज पार्टी इसकी कड़ी निन्दा करती है। भीमा-कोरेगांव में शौर्य दिवस की ऐतिहासिक सालगिरह के मौके पर अपने बुजुर्गों, वीर महार शहीदों को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने पहुंचे लाखों

लोगों को सुरक्षा व जनसुविधा देने के मामले में विफलता के साथ-साथ उनके ऊपर हमला कर के बीजेपी सरकार ने अपने जातिवादी रवैये की मिसाल कायम की है।

महोदय, मैं निवेदन करता हूं कि इस घटना की जो जांच कराई जाए, वह सुप्रीम कोर्ट के सिटिंग जज के माध्यम से कराई जाए। दूसरी बात यह है कि पूरे महाराष्ट्र के अंदर दलित और बेगुनाह, जो आन्दोलन में शामिल भी नहीं थे, उन्हें पुलिस द्वारा उनके घरों से पकड़ कर बन्द किया जा रहा है और पीटा जा रहा है, उसे रोका जाए।

महोदय, नांदेड़ जनपद के अंदर हच गांव में योगेश प्रसाद जाधव, जो छात्र था, पिटाई के कारण उसकी मृत्यु हो गई। अभी तक इस प्रकरण में एफआईआर नहीं हुई और न पोस्टमार्टम हुआ है। मेरा आग्रह है कि कृपया उसे न्याय दिलाया जाए। बहुजन समाजवादी पार्टी इस प्रकरण की कड़ी निन्दा करती है और इसकी जांच की मांग करती है।

श्री शरद पवार (महाराष्ट्र)ः सभापति जी, 1 जनवरी, 2018 को भीमा कोरेगांव में जो कुछ हुआ, उससे पूरे देश के लोगों को बहुत ठेस लगी है। इसे स्पष्ट करने के लिए मुझे थोड़ा पीछे जाना पड़ेगा, क्योंकि वहां का इतिहास है और उसका एक बैकग्राउंड है। वहां 200 साल पहले एक लड़ाई हुई थी और जंग में पेशवा, जो छत्रपति के सेनापति थे, उनके सेनापति को हराने का काम ब्रिटिशर्स ने किया था। ब्रिटिशर्स की जो फौज थी, उसमें महार रेजिमेंट नाम की एक रेजिमेंट तब से है और आज भी भारतीय सेना में महार रेजिमेंट है। यह देश की रक्षा में बहुत बड़ा योगदान देने वाली रेजिमेंट है। वहां महार रेजिमेंट ने पेशवा को डिफीट करने का काम किया था और जिस जगह पर डिफीट किया था, उस जगह पर उसका एक मेमोरियल बना। इस मेमोरियल पर पिछले दो सौ सालों से हमेशा राज्य के दलित समाज के लोग श्रद्धा से अपनी भावना व्यक्त करने के लिए जाते हैं। मैं खुद पिछले पचास सालों से जानता हूँ कि वहां लोग जाते हैं और पिछले पचास सालों में वहां कभी कोई भी छोटा-बड़ा इंसिडेंस नहीं हुआ। उस रास्ते में जितने गांव हैं, वहां के लोग स्तंभ के दर्शन करने के लिए आने वाले लोगों की हर तरह से मदद करते हैं, हमेशा सुविधा देते हैं, मगर इस साल क्या हुआ? एक महीने पहले वहां जो गांव है, जिसका नाम वढु है, उस गांव में शिवाजी का युग संभाजी राजे, जिनकी हत्या दो सौ साल पहले की थी, उनकी वहां समाधि है। गांव के लोगों ने संभाजी की समाधि की रक्षा करने के लिए, जिन्होंने अच्छा योगदान दिया था, वह दलित समाज का व्यक्ति था, बाद में उनकी भी समाधि वहा ं बनाई गई थी। अनफॉर्चुनेटली एक महीने पहले कुछ सांप्रदायिक लोगों ने ने वहां जाकर, मैं किसी का नाम लेना नहीं चाहता हूँ, क्योंकि महाराष्ट्र सरकार ने इनके खिलाफ न्यायिक जांच तय किया है और दो का नाम यहां रजनी ताई ने लिया था, इनके खिलाफ केस किया है और ज्यूडिशियल इन्क्वायरी भी एनाउंस की है, इसलिए इसमें ज्यादा बोलना ठीक नहीं है। मैं एक बात बताता हूँ कि वहां जो दलित व्यक्ति की समाधि थी, इस पर हमला करने की कोशिश कुछ लोगों ने की और इसका एक रिएक्शन आ गया। जब पहली तारीख को वहां लाखों की संख्या में लोग गए, तो इनके ऊपर कोई पत्थरबाजी हो गई। मुझे लगता है कि जब इतनी बड़ी संख्या में लोग वहां जाने की स्थिति में थे, जो सिको मालूम था, तो इसके लिए जरा ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता थी, ध्यान दिया नहीं और इसलिए यह स्थिति पैदा हो गई।

श्री सभापतिः धन्यवाद, शरद पवार जी।

श्री शरद पवारः इससे अगले दो-तीन दिनों में महाराष्ट्र के कई शहरों में पत्थरबाजी हो गई, हमले हो गए। मैं अपील करता हूँ कि जो हो गया, सो हो गया, लेकिन इसमें जल्दी से जल्दी शांति कायम करने के लिए और समाज के दोनों लोगों में समरसता लाने के लिए सब लोगों के सहयोग की आवश्यकता है।

श्री सभापतिः शरद जी बहुत अनुभवी हैं, पूर्व मुख्य मंत्री भी रहे हैं, वरिष्ठ नेता भी हैं, उनको, वहां के समाज की जो नाजुक स्थिति है, वह मालूम है। आज हम लोगों ने भी अखबारों में पढ़ा है, एक अखबार में तो डिटेल्ड एकाउंट भी दिया है। इसलिए उसको ध्यान में रखकर सभी को साथ लाने के लिए, सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए हमारा प्रयास होना चाहिए। सब लोग उसको थोड़ा ध्यान में रखिए।

SHRIMATI KANIMOZHI (Tamil Nadu): Sir, the spirit of patriotism is not owned by anybody. It cannot be defined and it cannot be inflicted on anybody. I think this is the basic understanding that we need today. Dalits, students, women and minorities are being attacked in many parts of the country. They are being forced to live in fear. Unfortunately, many Governments are not taking enough action to protect the depressed classes in this country. Whatever has happened cannot be looked at as an isolated incident. We have to look at long-term solutions. There is a lot of pain and fear and feeling of getting into a ghetto among the minorities, dalits, women and students. I think this has to be addressed. A long-term solution has to be found and they have to be made to feel comfortable and safe in this country. And a proper enquiry, a judicial enquiry, which many Members have asked for, has to be done.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): सर, महाराष्ट्र के भीमा-कोरेगांव में जो हुआ है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन जिनको इतिहास की जानकारी नहीं है, वे लोग यहां ज्यादा बोल रहे हैं। महाराष्ट्र सरकार की भूमिका बहुत ही संयमित रही, परिस्थिति और बिगड़ सकती थी, लेकिन सरकार ने स्थिति को देखकर उस वक्त जो किया है, मुझे लगता है कि वह ठीक किया है।

दूसरी बात यह है कि मैं यहां सुन रहा हूँ कि कुछ लोग बार-बार इसके लिए हिन्दुत्ववादी संगठनों को ब्लेम करते हैं, लेकिन वहां पर किसी का कोई रोल नहीं रहा है, मैंने देखा है। जो पेशवा थे, उनका संबंध कोई आरएसएस से नहीं रहा या कोई हिन्दू एकता मंच से नहीं रहा। छत्रपति शिवाजी महाराज, जो मराठा साम्राज्य के सबसे बड़े प्रमुख रहे और पेशवा मराठा साम्राज्य का एक भाग रहा और पेशवाओं की लड़ाई अंग्रेजों से यानी ईस्ट इंडिया कंपनी से रही थी, हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए। इसलिए इस मामले में फिर जो एक बार हुआ है, जो ब्रिटिश नीति रही डिवाइड एण्ड रूल की, भीमा-कोरेगांव में भी उसी तरह से कोई invisible hand काम रहा था डिवाइड एण्ड रूल की राजनीति करने के लिए, जिसका परिणाम हमें सिर्फ महाराष्ट्र में ही नहीं, अपितु पूरे देश में भुगतना पड़ रहा है। मैं आज भी कहता हूँ कि महाराष्ट्र में आज जो परिस्थिति बनी है....., महाराष्ट्र, मुम्बई देश की आर्थिक रीढ़ है, उसको खत्म करने के लिए, unstable करने के लिए और देश की आर्थिक दिशा कमजोर करने के लिए अगर यह कोई साजिश हो रही है, तो इससे बचाने में सिर्फ राज्य सरकार की ही भूमिका नहीं है, बल्कि मैं यह कहूंगा कि केंद्र सरकार को भी उस पर ध्यान देना चाहिए और महाराष्ट्र को इस स्थिति से बचाना चाहिए।

श्री सभापतिः धन्यवाद। सरदार बलविंदर सिंह भुंडर।

सरदार बलविंदर सिंह भुंडर (पंजाब): ऑनरेबल चेयरमैन सर, यह जो घटना महाराष्ट्र में हुई है, यह बहुत दुखद है, बुरी है। इन घटनाओं से देश की जो एकता और अखंडता है, उसको खतरा पैदा हो सकता है। मैं इसकी पिछली भूमिका में नहीं जाना चाहूंगा, मैं तो एक ही बात कहना चाहूंगा कि चाहे यह घटना हो, चाहे इससे पहले कई जगह इक्का-दुक्का जो घटनाएं हुई हैं, हमें किसी भी घटना को सरसरी तौर पर नहीं लेना चाहिए। देश की मजबूती के लिए हम सबको मिल कर काम करना चाहिए और जो समाज के अभिवर्ग हैं, जैसे गुरुग्रंथ साहिब की वाणी है। * "In Sikhism there is no caste system and in Shri Guru Granth Sahib, Guru Nanak Dev Ji has said that there is no caste and everyone is equal in this world. Anyone from any class may chant the name of the god. That the four castes are equal in respect to the teachings and who by becoming Gurmukh understands the Naam is saved and such person sees Parmatma in the heart of each and every being. If we work on this sermon, then there will not be any casteism and discord. The country will progress and the brotherhood will increase."

श्री सभापतिः धन्यवाद। श्री डी. राजा।

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, I had given separate notice to raise the issue of increasing atrocities on Dalits, but now I will confine only to what happened in Maharashtra.

Sir, I strongly condemn the attacks on Dalits in Maharashtra. I hope still, India is a country which believes in rule of law; the law will take its course and the culprits will be punished appropriately. Having said that, Sir, I must point out that the Dalit question needs to be addressed honestly by all the political parties and by the Parliament. The Dalit assertion must be understood in a correct historic perspective. But in the context of Maharashtra, what is happening is that the Dalit assertion is being undermined, on the one hand, by attributing it to some kind of instigation by Left-wing extremist forces, and, on the other hand, being undermined by attributing it to some handiwork of "breaking India" brigade. This is done by those who belong to a particular ideology. That particular ideology is divisive, sectarian and communal and fascistic. I have no hesitation to say this. This has to be condemned by all and by Parliament. We should address Dalit question with all honesty and sincerity.

MR. CHAIRMAN: Thank you. The moment we go on a political line, injustice is done. That is why, Sharad Pawarji, in spite of his political position, made a balanced statement about the entire background and also made an appeal. That should be the approach. Please keep this in mind. Otherwise, it will be the same. Everybody will be making a statement and then, tensions will grow further and no useful purpose will be served. Now, Shri Ramdas Athawale because he has given his name from his Party.

---

* English translation of Original speech delivered in Punjabi.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले): चेयरमैन सर, भीमा-कोरेगांव में जो घटना अभी हुई है, यह निन्दनीय है, निषेधार्थ है। दलितों पर जहां भी अत्याचार होते हैं, चाहे वहां कांग्रेस की सरकार हो या बीजेपी की सरकार हो, मुझे लगता है कि दलित अत्याचार के विषय को राजनीतिक तौर से नहीं देखना चाहिए। सब लोगों को मिल कर इस जाति-व्यवस्था को खत्म करने की कोशिश करनी चाहिए। भीमा-कोरेगांव में जब यह इंसिडेंट हुआ, तो भीमा-कोरेगांव में, जहां पर लोग लाखों की संध्या में जमा होते हैं, वहां कुछ नहीं हुआ, लेकिन सणसवाड़ी नामक एक गांव में पथराव हुआ। वहां जो घटना घटी थी, जिसके बारे में पवार साहब ने बताया कि मुगलों ने वहां सम्भा जी महाराज की हत्या की थी। उनके शव के जो टुकड़े थे, उनको वहां के महार समाज के गोविंद गायकवाड़ नामक एक व्यक्ति ने इकट्ठे करके उनका अंतिम संस्कार भी किया था। वहां 30 तारीख को जो घटना हुई थी, तो मैं वहां 31 तारीख को गया भी था। वहां गांव में पूरी शान्ति स्थापित हो गयी थी और दोनों समाजों ने इसे मान लिया था कि हम सब मिल कर रहेंगे। लेकिन वहां अचानक सणसवाड़ी में हमला हुआ। वहां पुलिस आयी, एसआरपी आयी और वहां शान्ति स्थापित करने का काम किया। राज्य सरकार ने उसकी ज्यूडिशियल इन्क्वायरी अनाउंस की है। इसमें जो भी हैं, चाहे वे किसी भी पार्टी के हों, किसी भी संगठन के हों, उनके ऊपर कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने के लिए राज्य सरकार ने, मुख्य मंत्री देवेंद्र फडनवीस जी ने अनाउंस किया है। मुझे लगता है कि इस घटना का सबको निषेध करना चाहिए। इसे अलग चश्मे से नहीं देखना चाहिए।

श्री सभापति: ठीक है।

श्री रामदास अठावले: सर, मेरा यह कहना है कि जब कांग्रेस की सरकार थी, तब भी अत्याचार होते थे। तो क्या सरकार अत्याचार करने के लिए बोलती है?

श्री सभापति: ठीक है। इसे छोड़ दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री रामदास अठावले: वहां लोकल लेवल पर अत्याचार होता है, बीजेपी की सरकार होती है, उधर भी अत्याचार होता है। ...**(व्यवधान)**... लोग उन पर अत्याचार करते हैं। ...**(व्यवधान)**... इसलिए मुझे लगता है कि सब लोगों को मिल कर इसका पोलिटिकलाइजेशन नहीं होने देना चाहिए। हर साल कम से कम 45,000 दलितों पर अत्याचार की घटनाएँ होती हैं।

श्री सभापति: ठीक है, धन्यवाद।

श्री रामदास अठावले: इसीलिए उसको खत्म करने के लिए सभी लोगों को कोशिश करनी चाहिए। ...**(व्यवधान)**... मैं इस घटना की निंदा करता हूँ।

श्री सभापति: ठीक है।

श्री रामदास अठावले: जिन्होंने यह घटना की है, जिन्होंने दंगा-फसाद करने का काम किया है, उनके ऊपर राज्य सरकार कड़ी कार्रवाई करेगी, ऐसा मेरा मानना है, धन्यवाद।

श्री अमर शंकर साबले (महाराष्ट्र): सभापति महोदय, महाराष्ट्र में भीमा-कोरेगाँव में जो घटना घटी है, उसकी मैं कड़ी निन्दा करता हूँ। दलितों पर जो अत्याचार हुआ है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है और इस सदन के सभी पार्टीज़ के साथियों ने जो मुद्दा रखा है, उस पर पार्टी से ऊपर उठ कर

विचार करना चाहिए। लेकिन यह सब बातें कहते वक्त कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष ने जो ट्वीट किया है और इस भीमा-कोरेगांव में ...**(व्यवधान)**... भीमा-कोरेगांव में ...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ादः सर ...**(व्यवधान)**... वे इस हाउस के मेम्बर नहीं हैं। ...**(व्यवधान)**... मैंने पहले भी कहा है ...**(व्यवधान)**... मैंने पहले भी यह कहा है कि जो उस सदन का मेम्बर है, उसके बारे में ...**(व्यवधान)**... दूसरे सदन के मेम्बर के बारे में यहां मत बोलिए। ...**(व्यवधान)**...

†جناب غلام نبی آزاد: سر، ---(مداخلت)--- وہ اس ہاؤس کے ممبر نہیں ہیں ---(مداخلت)--- میں نے پہلے بھی کہا ہے ---(مداخلت)--- میں نے پہلے بھی یہ کہا ہے کہ جو اس سدن کا ممبر ہے، اس کے بارے میں ---(مداخلت)--- دوسرے سدن کے ممبر کے بارے میں یہاں مت بولئے ---(مداخلت)---

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh): I object to that. ...(*Interruptions*)... दूसरे सदन के सदस्य को ...**(व्यवधान)**...

श्री अमर शंकर साबलेः मैंने नाम नहीं लिया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः प्लीज़। ...**(व्यवधान)**... Your leader is on his legs. ...(*Interruptions*)... आपके लीडर हैं न? ...**(व्यवधान)**... लीडर से बोलिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री अमर शंकर साबलेः मैंने किसी का भी नाम नहीं लिया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री आनन्द शर्माः आप यह नहीं कह सकते। ...**(व्यवधान)**... इसको आप विवादित मत कीजिए। ...**(व्यवधान)**... सदन के अन्दर विवाद खड़ा मत कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

MR. CHAIRMAN: If any name of the Member of the other House is taken, it would not go on record.

श्री अमर शंकर साबलेः सर, मैंने किसी का भी नाम नहीं लिया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः मैंने कहा न? ...**(व्यवधान)**... आप चिन्ता मत कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री राम विचार नेताम (छत्तीसगढ)ः सर ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः आप बैठिए। ...**(व्यवधान)**... आप बैठिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री राम विचार नेतामः सर ...**(व्यवधान)**... ये दलित हैं, इसलिए ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः राम विचार जी, बैठिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री राम विचार नेतामः सर ...**(व्यवधान)**... एक दलित को बोलने नहीं दिया जा रहा है। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः सदन में सब समान हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री राम विचार नेतामः एक दलित को बोलने नहीं दिया जा रहा है। ...**(व्यवधान)**...

† Transliteration in Urdu script.

श्री सभापतिः आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... वे सक्षम हैं। साबले जी सक्षम हैं। वे खुद बोलेंगे। आप चिन्ता मत कीजिए। ...(**व्यवधान**)... प्लीज़। ...(**व्यवधान**)... नहीं। यह किसी के लिए भी शोभा नहीं देता कि एक सदस्य खड़ा हो और दूसरा अन्य कोई बोले। मेरा सबको सुझाव है कि कृपया हर सदस्य को अपनी मनोभावना व्यक्त करने के लिए मौका दीजिए। अगर उसने रूल्स के खिलाफ कुछ बोला, परम्परा के खिलाफ बोला, तो मेरे ध्यान में लाइए। मैं उसे देखूँगा।

श्री अमर शंकर साबलेः महोदय, इस सदन में एक पक्ष यह रखा गया है कि दलितों पर कैसा अत्याचार हुआ है, इसके कारण क्या हैं, लेकिन एक दूसरा पक्ष भी है। इस विजय स्तम्भ की अभिवादन सभा, जो पुणे में शनिवारवाड़ा के सामने जो हुई, उस अभिवादन सभा में, उन महार सैनिकों के शौर्य के बारे में बात कहनी चाहिए थी। लेकिन वहां जो बातें हुईं, चाहे जिग्नेश मेवानी हों, चाहे उमर खालिद हों, वे इस देश के लिए ...(**व्यवधान**)... उन्होंने भड़काऊ भाषण देने का प्रयत्न किया। ...(**व्यवधान**)...

श्री आनन्द शर्माः सर, इनकी यह नीयत अच्छी नहीं है। ...(**व्यवधान**)... यह तो झगड़ा करवाने की नीयत है। ...(**व्यवधान**)...

श्री अमर शंकर साबलेः जो भाषण वहां हुए हैं, वे भड़काऊ भाषण हुए हैं। ...(**व्यवधान**)... उनके कारण भी महाराष्ट्र का जो वातावरण है, वह बिगड़ा है। ...(**व्यवधान**)... इसका यह बाजू भी सदन के सामने आना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः आप सीनियर हैं, आप बैठ जाइए।...(**व्यवधान**)... प्लीज़, आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)...

श्री अमर शंकर साबलेः दलितों के ऊपर जो अत्याचार होता रहा है, वह तो निन्दनीय है ही, लेकिन इस निन्दा के पीछे कैसी विचाराधारा काम करती है, यह भी देश के सामने आना चाहिए। समाज से ऊपर उठकर और राजकीय पक्ष से ऊपर उठकर इस पर विचार करना चाहिए। जो हर दलित उत्पीड़न की बात होती है, वह निन्दाजनक है, लेकिन हर दलित उत्पीड़न में कांग्रेस संघ को लाने की जो कोशिश करती है, वह भी निन्दा करने लायक है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः बस अब आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... आपकी बात समाप्त हो गई है। Now, Shri Sambhaji Chhatrapati; you wish to make an appeal.

SHRI SAMBHAJI CHHATRAPATI (Nominated): Sir, I may be given an extra minute. Sir, the reason is, I come from the family of Chhatrapati Shivaji Maharaj, Chhatrapati Sambhaji Maharaj and Chhatrapati Sahu Maharaj. I would like to address some portion in Marathi.

MR. CHAIRMAN: But, please be brief.

SHRI SAMBHAJI CHHATRAPATI: I would be brief, Sir.

Maharashtra is the land of Chhatrapati Shivaji Maharaj, Chhatrapati Sahu Maharaj, Dr. Babasaheb Ambedkar and Mahatma Jyotiba Phule. We have always followed in

their footsteps and followed their ideologies; rather the entire nation follows it. I am deeply hurt and disturbed by the social unrest caused by the two communities. I have been travelling extensively in Maharashtra to get the Bahujan Samaj together. Today is the saddest day of my life seeing the violence between these two communities. We in Maharashtra have lived together for ages peacefully and harmoniously irrespective of the existence of various castes and religions. Shivaji Maharaj did not work for one community; he worked for the entire society. Sahu Maharaj also brought the Bahujan Samaj together, which had Marathas and the Dalits together and called it the Bahujan Samaj.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI SAMBHAJI CHHATRAPATI: Dr. Ambedkar also worked against all caste discrimination, and not for what is happening in Maharashtra right now..

MR. CHAIRMAN: What is your appeal, please?

SHRI SAMBHAJI CHHATRAPATI: I appeal to the people of Maharashtra to keep away from violence and the unwanted elements of society who are disturbing the peace and harmony in the society. *

श्री सतीश चंद्र मिश्राः सर, आपने कहा था कि होम मिनिस्टर साहब जवाब देंगे, उनका रिप्लाई आएगा।

श्री नरेश अग्रवालः गवर्नमेंट का रिप्लाई नहीं आया।

MR. CHAIRMAN: No, no. I have already told him. They have taken note of it. Once the Home Minister comes, he will respond to this. The Home Minister was not well yesterday.

Zero Hour submissions now. Shri Ritabrata Banerjee.

Need to rename West Bengal as Bangla

SHRI RITABRATA BANERJEE (West Bengal): Sir, I am making this Zero Hour submission in this august House to urge upon the Union Government to clear the name Bangla in place of West Bengal as passed by the West Bengal State Assembly.

Sir, West Bengal came into existence due to the partition of Bengal during our Independence. Sir, Bengal was at its peak of nationalist movement at the dawn of the 19th century, and eventually, emerged as a formidable threat to the British Raj. To curb this nationalist movement, the Britishers decided to divide Bengal in 1905, a move vehemently opposed by various leaders of the time, including Rabindranath Tagore himself.

---

*Hon. Member spoke in Marathi.